अध्याय-चतुर्थ
प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय चतुर्थ -4
प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 समंक-विश्लेषण एवं व्याख्या :-

संग्रहित समंको का विश्लेषण, सारणीयन तथा प्रस्तुतीकरण आदि अनुसंधान कार्य का महत्वपूर्ण अंग है जिसे प्रयुक्त किए बिना शोध कार्य को विधिवत् प्रस्तुत करना संभव नहीं हैं ! इस अध्याय में ग्रामीण एवम् नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि, समाजिक- आर्थिक स्तर व उपलब्धि अभिप्रेरणा का अधययन करने के उद्धेश्य से एकत्रित किये गये आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण करते समय अध्ययन के उद्धेश्यों को ध्यान में रखकर निष्कर्ष निकाले गये हैं।

विश्लेषण समस्या के आधार पर निम्नलिखित भागों में किया गया -

(1) सामाजिक- आर्थिक स्तर
(2) शैक्षिक - उपलब्धि
(3) उपलब्धि-अभिप्रेरणा

परिकल्पना क्रमांक- 1

ग्रामीण एवं नगरीय उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श में चयनित विद्यालयों की ग्रामीण एवं नगरीय उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि की शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करनेहेतु कक्षा पांचवी व छठवी,सातवी के वार्षिक परीक्षा परिणाम को प्रतिशत अंको मे प्राप्त किया गया। उन्हीं के आधार पर अन्तर ज्ञात करने हेतु टी-मूल्य सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है। इसे निम्न तालिका द्धारा स्पष्ट किया गया है।

तालिका क्र. - 4.1

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि

क्र. बालिकाओं की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मुक्तांश (df)	टी-मूल्य (t)
ग्रामीण- 60	51.40	11.20	118	3.328*
नगरीय- 60	58.30	11.51	118	

* मुक्तांश (df) - 118 टी. का मूल्य 3.328 है, जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है।

व्याख्या :-

उपरोक्त तालिका क्रमांक - 4.1 को देखने से स्पष्ट होता है कि चयनित ग्रामीण बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 51.40 है तथा प्रामाणित विचलन 11.20 है ।चयनित नगरीय बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 58.30 व प्रामाणिक विचलन 11.51 है ।

मुक्तांश (df) - 118 सारणी मान .01 स्तर पर सार्थकता का मान = 2.62 है व .05 स्तर पर सार्थकता का मान = 1.98 है। प्रस्तुत तालिका में टी-मूल्य 3.328 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट है कि ग्रामीण व नगरीय उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है । अत: उपरोक्त शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है ।

निष्कर्ष :-

ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं की तुलना में कम होने के मुख्य कारण घर का वातावरण, माता-पिता का अशिक्षित होना, पढ़ने के लिये प्रोत्साहन न मिलना एवं सामाजिक संकीर्णता हो सकते है ।

परिकल्पना क्र.- 2

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

न्यादर्श में चयनित विद्यालयों की ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की "उपलब्धि अभिप्रेरणा" ज्ञात करने हेतु टी.आर. शर्मा के उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण का प्रयोग किया गया, उसी आधार पर अन्तर ज्ञात करने हेतु "टी - मूल्य" सांख्यिकी का प्रयोग किया गया । इसे निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया गया है।

तालिका क. - 4.2

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा

बालिकाओं की संख्या (N)		मध्यमान (M)	प्रमाणिक चिन्ह (SD)	मुक्तांश (df)	टी-मूल्य (t)
ग्रामीण-	60	22.52	3.89	118	4.689 *
नगरीय-	60	25.88	3.97	118	

मुक्तांश (df) - 118 पर 'टी' का मूल्य 4.689 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है।

व्याख्या :-

उपरोक्त तालिका क्रमांक - 4.2 को देखने से स्पष्ट होता है कि चयनित ग्रामींण बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का मध्यमान 22.52 है व प्रामाणिक विचलन का मान 3.89 है। चयनित नगरीय बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का मध्यमान 25.88 है व प्रामाणिक विचलन 3.97 है।

मुक्तांश (df) - 118 पर सारणी मान 01 स्तर पर सार्थकता का मान = 2.62 है व .05 पर सार्थकता का मान = 1. 98 है। प्रस्तुत तालिका में टी का मूल्य 4.689 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं नगरीय उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर है। अत: उपरोक्त शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष :-

ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं की तुलना में कम होने के मुख्य कारण घर व पड़ोस का वातावरण उपयुक्त न होना, पढ़ने के लिये प्रोत्साहन न मिलना व माता-पिता का शिक्षा के प्रति जागरूक न होना हो सकते हैं।

परिकल्पना क्र. - 3

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

न्यादर्श में चयनित विद्यालयों की ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की सामाजिक-आर्थिक स्तर को ज्ञात करने हेतु डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ की सामाजिक-आर्थिक परिसूची का प्रयोग किया गया । इसी के आधार पर अन्तर ज्ञात करने हेतु " टी-मूल्य" सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है ।

तालिका क्र. - 4.03

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च स्तर की बालिकाओं का सामाजिक - आर्थिक स्तर :

बालिकाओं की संख्या	(N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मुप्तांश (df)	टी-मूल्य (t)
ग्रामीण	60	72.78	19.14	118	3.972*
नगरीय	60	87.92	22.46	118	

* मुक्तांश (df) - 118 पर टी का मूल्य **3.972** है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है ।

व्याख्या :-

उपरोक्त तालिका क्रमांक - 4.3 को देखने से स्पष्ट होता है कि चयनित ग्रामीण बालिकाओं को सामाजिक - आर्थिक स्तर का मध्यमान 72.78 है व प्रामाणिक विचलन 19.14 है । चयनित नगरीय बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर का मध्यमान 87.92 व प्रामाणिक विचलन 22.46 है ।

मुक्तांश (df) - 118 पर सारणी मान 0.01 स्तर पर सार्थकता मान = 2.62 है व 0.05 स्तर पर सार्थकता मान = 1.98 है। प्रस्तुत तालिका में टी मूल्य 3.972 है जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर में सार्थक अन्तर हैं । अतः उपयुक्त शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है ।

निष्कर्ष :-

ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं का सामाजिक-आर्थिक स्तर नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं की तुलना में कम होने के मुख्य कारण ग्रामीणों का कम शिक्षित होना, मासिक आय का कम होना, कृषि ही मुख्य व्यवसाय होना, कृषि को परंपरागत विधि से करना आदि हो सकते हैं।

परिकल्पना क्र. - 4

नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक - आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सामाजिक - आर्थिक स्तर परिसूची के माध्यम से नगरीय बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर की जानकारी प्राप्त की गई, जिसके आधार पर सामाजिक - आर्थिक स्तर का तीन भागों में बांटा गया है -

1. उच्च स्तर
2. मध्यम स्तर
3. निम्न स्तर

परिसूची से प्राप्त जानकारी के आधार पर तीन वर्गों के अन्तर्गत आने वाली बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी द्वारा प्राप्त किया गया, जिनका विश्लेषण नीचे बनी तालिका में किया गया है।

तालिका क्र. - 4.4

नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव -

प्रसरण स्त्रोत (ANOVA)	वर्ग योग (Sum of squares)	औसत वर्ग योग (Mean of squares)	मुक्तांश (df)	एफ - अनुपात (f)
समूहों के मध्य	300.446	150.218	2	
समूहों के अन्तर्गत	7516.16	131.863	57	1.139*
सम्पूर्ण	7816.600		59	

*मुक्तांश(df)- 2, 57 पर एफ सारणी का मान 1.139 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है

व्याख्या:

उपरोक्त तालिका 4.4 से स्पष्ट है कि बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर के आधार पर किये गये वर्गों के अन्तर्गत बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्रसरण का अनुपात मुक्तांश (df)-2,57 पर एफ सारणी का मान 0.05 स्तर पर सार्थकता मान = 3.07 है व 0.01 स्तर पर सार्थकता मान = 4.78 है व प्रस्तुत तालिका में प्रसरण अनुपात 1.139 है जो कि .05 पर भी सार्थक नहीं है। इससे यह ज्ञात होता है कि बालिकाओं का सामाजिक-आर्थिक स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित नहीं करता है। अत: परिकल्पना क्रमांक - 4 को स्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष :-

नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं का सामाजिक-आर्थिक स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित नहीं करता है। इसका मुख्य कारण विद्यालय में शिक्षा की समान परिस्थितियां व अवसरों का प्राप्त होना, बालिकाओं का शिक्षा के प्रति गम्भीर होना व नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं के सामजिक आर्थिक स्तर के अंतर्गत उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग में ज्यादा अंतर न होना हो सकते हैं।

परिकल्पना क्र. - 5

ग्रामीण क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर परिसूची के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक -आर्थिक स्तर की जानकारी प्राप्त की गई, जिसके आधार पर सामाजिक-आर्थिक स्तर को तीन भागों में बांटा गया :-

1. उच्च स्तर
2. मध्यम स्तर
3. उच्च स्तर

परिसूची से प्राप्त जानकारी के आधार पर तीन वर्गों के अन्तर्गत आने वाली बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी द्वारा प्राप्त किया गया, जिनका विश्लेषण नीच बनी तालिका में किया गया है।

तालिका क्रमांक - 4.5

ग्रामीण क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिण उपलब्धि पर प्रभाव :

प्रसरण स्त्रोत (ANOVA)	वर्ग योग (Sum of squares)	औसत वर्ग योग (Meanof squares)	मुक्तांश (df)	एफ-अनुपात (f)
समूहों के मध्य	358.018	179.509	2	
समुहों के अन्तर्गत	7046.382	123.621	57	1.448*
सम्पूर्ण	7404.400		59	

*मुक्तांश(df) - 2,57 पर एफ सारणी का मान 1.448 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है

व्याख्या :-

उपरोक्त तालिका 4.5 से स्पष्ट है कि बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर के आधार पर किये गये वर्गों के अन्तर्गत बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्रसरण का अनुपात मुक्तांश(df) - 2,57 पर एफ सारणी का मान 0.05 स्तर पर सार्थकता मान = 3.07 है एवं 0.01 स्तर पर सार्थकता मान = 4.78 है। प्रस्तुत तालिका में प्रसरण का अनुपात 1.448 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इससे यह ज्ञात होता है कि बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अत: परिकल्पना क्र. 4.5 को स्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष :-

ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं का सामाजिक-आर्थिक स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित नहीं करता है। इसका मुख्य कारण बालिकाओं का शिक्षा के प्रति गम्भीर होना, विद्यालय में शिक्षा के समान अवसर व परिस्थितियों का मिलना, बालिकाओं द्धारा प्रत्येक काम लगन से करना, ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं के सामजिक आर्थिक स्तर के अंतर्गत उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग में ज्याढा अंतर न होना हो सकते हैं।

परिकल्पना क्र. - 6

नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

'उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण' के माध्यम से नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा की जानकारी प्राप्त की गई, जिसके आधार पर उपलब्धि-अभिप्रेरणा को तीन भागों में बांटा गया है :

1. उच्च स्तर
2. मध्यम स्तर
3. निम्न स्तर

परीक्षण से प्राप्त जानकारी के आधार पर तीन वर्गों के अन्तर्गत आनेवाली बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अंतर प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी द्वारा प्राप्त किया गया, जिनका विश्लेषण नीचे विश्लेषण नीचे बनी तालिका में किया गया है -

<u>तालिका क्र. - 4.6</u>

<u>नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव :</u>

प्रसरण स्त्रोत (ANOVA)	वर्ग योग (Sum of squares)	औसत वर्ग योग (Meanof squares)	मुक्तांश (df)	एफ - अनुपात (f)
समूहों के मध्य	251.075	125.537	2	.946*
समूहों अन्तर्गत	7565.525	132.729	57	
सम्पूर्ण	7816.600		59	

*मुक्तांश (df)-2,57 पर एफ का मान .946 है जो0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

<u>व्याख्या</u> :- उपरोक्त तालिका 4.6 से स्पष्ट है कि बालिकाओं की उपलब्धि - अभिप्रेरणा के आधार पर किये गये वर्गों के अन्तर्गत बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्रसरण का अनुपात मुक्तांश - 2,57 पर एफ सारणी का मान 0.05 स्तर पर सार्थकता मान = 3.07 व 0.01 स्तर पर सार्थकता मान = 4.78 है प्रस्तुत तालिका में प्रसरण का अनुपात 0.946 है , जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है इससे यह ज्ञात होता है कि बालिकाओं की उपलब्धि -अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अत: परिकल्पना क्र. 4. 6 स्वीकार की जाती है।

<u>निष्कर्ष</u> :-

नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित नहीं करती है। इसके मुख्य कारण विद्यालय में सभी बालिकाओं को शिक्षा के समान अवसर मिलना व समान प्रोत्साहन व दण्ड मिलना हो सकते हैं।

<u>परिकल्पना क्र.</u>- 7

ग्रामीण क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा को ज्ञात किया गया, जिसके आधार पर उपलब्धि अभिप्रेरणा को तीन भागों में बांटा गया है -

1. उच्च स्तर
2. मध्य स्तर
3. उच्च स्तर

परीक्षण से प्राप्त जानकारी के आधार पर तीन वर्गों के अन्तर्गत आने वाली बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अंतर प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी द्धारा प्राप्त किया गया, जिनका विश्लेषण नीचे बनी तालिका में किया गया है -

<u>तालिका क्र.- 4.7</u>

नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव :

प्रसरण स्त्रोत, (ANOVA)	वर्गयोग, (Sum of squares)	औसतवर्गयोग (Mean of squares)	मुक्तांश, (df)	एफ अनुपात (f)
समूहों के मध्य	563.167	281.908	2	
समूहों के अंतर्गत	6840.583	120.010	57	2.349*
सम्पूर्ण	7404.400		59	

*मुक्तांश - 2,57 पर एफ का मान 2.349 है जो 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है। मान -3.04 व 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 4.78 है।

व्याख्या :-

उपरोक्त तालिका क्र. 4.7 से स्पष्ट होता है कि बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा के आधार पर किए गए वर्गो के अन्तर्गत बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्रसरण का अनुपात मुक्तांश (df) 2,57 पर एफ सारणी 0.05 स्तर पर सार्थकता मान 3.04 है, व 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 4.78 है। प्रस्तुत तालिका में प्रसरण का अनुपात-2.349 है जो कि .05 पर सार्थक नही है। इसके यह ज्ञात होता है कि बालिकाओं की उपलब्धि - अभिप्रेरणा का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नही पडता है।अत: परिकल्पना क्र. 4.7 को स्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष :-

ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की उपलब्धि अभिाप्रेरणा उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित नही करती है। इसके मुख्य कारण, बालिकाओं को विद्यालय में समान दण्ड एवम् प्रोत्साहन मिलना, विद्यालय में शिक्षा के समान अवसर व परिस्थितियों का होना हो सकते हैं।

परितल्पना क्र. 8

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई अन्तर नही हैं।

तालिका :-4.8

बहुस्तरीय प्रतिगमन समीकरणा :

स्वतंत्रचर : उपलब्धि अभिप्रेरणा व सामाजिक - आर्थिक स्तर,

आश्रित चर : शैक्षिक उपलब्धि

	प्रसरण विश्लेषण (ANOVA)	वर्गयोग (Sum of squares)	औसत वर्गयोग (Mean of squares)	मुक्तांश (df)	एफ अनु. (f)
बहुस्तरीय **R-0.292**					
वर्ग **R-0.085**	प्रतिगमन समी.	1418.63	1418.63	1	10.99*
समायोजित वर्ग **R- .077**	शेष भाग.-	1530	129.07		118
प्रमाणिक त्रुटि - 11.63	सम्पूर्ण -	16649.3		119	

समीकरण के चर

चर (Variables)	बी (B)	प्रमाणिक त्रुटि (S.E)	बीटा (Beta)	टी.मू. (t)	सार्थकता (Sig.)
उपलब्धि अभिप्रेरणा	0.809	0.244	0.292	3.315	0.01
अचर (Constant)	35.26	5.99			

व्याख्या :-

प्रसरण विश्लेषण करने के बाद प्राप्त बहुस्तरीय आर(R) प्रतिगमान 0.293 है, जो सार्थक है। एक (f) मान = 10.99 है। जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। उपलब्धि अभिप्रेरणा के Bगुणांक का टी मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। उपलब्धि अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक बहुस्तरीय सहसम्बन्ध है।

बी -(B) गुणांक = 0.809 है इसे इस तरह बताया जा सकता है कि उपलब्धि अभिप्रेरणा की प्रत्येक इकाई के बढने के साथ ही, शैक्षिक उपलब्धि की 0.809 इकाई बढेगी। R^2= 0.085 है, अर्थात् शैक्षणिक उपलब्धि की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर निर्भरता 8% है। इस प्रकार उपलब्धि अभिप्रेरणा शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। बहुस्तरीय प्रतिगमन समीकरण निम्नलिखित है :-

शैक्षिक उपलब्धि = 0.809 उपलब्धि अभिप्रेरणा + 35.26

निष्कर्ष :-

बहुस्तरीय प्रतिगमन समीकरण हल करने से पता चलता है कि प्रस्तुत अध्ययन के बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्थिति का कोई प्रभाव दिखाई नही देता है। प्रस्तुत अध्ययन की सभी बालिकाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति लगभग समान है। इसलिए इसका शौक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। न्यादर्श का चयन जब हम करते है तो एक जैसा न्यादर्श लेने की कोशिश करते हैं जिससे विचलन कम हो। अगर सामाजिक आर्थिक स्तर नियंत्रित हो जाता है तो उपलब्धि अभिप्रेरणा, शैक्षिक उपलब्धि को ज्यादा प्रभावित करती है।

प्रस्तुत अध्ययन में जब हम ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक-आर्थिक स्तर व उपलब्धि अभिप्रेरणा में अंतर देखते है तब हम पाते है कि ग्रामीण व नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक आर्थिक स्तर व उपलब्धि अभिप्रेरणा में अंतर है । ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक आर्थिक स्तर व उपलब्धि अभिप्रेरणा नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं की अपेक्षा कम पाई गई।

जब हम एक क्षेत्र (ग्रामीण व नगरीय) के अंतर्गत सामाजिक आर्थिक स्तर व उपलब्धि अभिप्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव देखते हैं तो उनमें कोई अंतर नहीं आता है लेकिन जब हम ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की तुलना करते हैं तो इसमें अंतर आता है। अर्थात् एक समूह के अंतर्गत अंतर नहीं है लेकिन दो समूहों के मध्य अंतर है।

जब हम ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उपलब्धि अभिप्रेरणा व सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रभाव को देखते है तब हमें प्राप्त होता है कि सामाजिक आर्थिक स्तर की अपेक्षा उपलब्धि अभिप्रेरणा शैक्षिक उपलब्धि को ज्यादा प्रभावित करता है। सामाजिक आर्थिक स्तर का अपना महत्व है लेकिन जब सामाजिक आर्थिक स्तर सभी बच्चों का लगभग समान होता है तो उपलब्धि अभिप्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव दिखाई देता है।